© NCERT not to be republished

6 अनुसंधान एवं उपक्रम

शिल्प अन्वेषण पर आवंटित दीर्घ कार्य

ग्यारहवीं एवं बारहवीं दोनों कक्षाओं के लिए आवंटित दीर्घ कार्य में प्रचलित शिल्प परंपरा का वैज्ञानिक और व्यवस्थित प्रलेखन होगा। दीर्घ कार्य निम्न बिंदुओं पर केंद्रित होगा–

- शिल्प परंपरा और शिल्प का इतिहास
- दर्शनशास्त्र और सौंदर्य शास्त्र
- पदार्थ, प्रक्रिया और तकनीकें
- पर्यावरण और संसाधन प्रबंधन
- सामाजिक संरचना
- अर्थव्यवस्था एवं विपणन
- अंतर्राष्ट्रीय उदाहरण

उपर्युक्त विषयों हेतु आवंटित किए गए दीर्घ कार्य की आयोजना, निष्पादन और प्रस्तुतीकरण की विभिन्न अवस्थाएँ हो सकती हैं। इसे चार से छह छात्रों के समूह में किया जा सकता है और शिल्पकार किसी विशेष परंपरा के लिए एक साथ मिलकर कार्य कर सकते हैं।

कक्षा 11वीं के छात्र और शिल्पकार विशेष शिल्प परंपरा में एक साथ काम कर सकते हैं।

यदि विद्यालय एवं छात्र इसे सुविधापूर्ण पाएँ तो कक्षा 12वीं के छात्र अन्य क्षेत्र के शिल्प समूह पर काम कर सकते हैं।

प्रारंभिक अवस्था में, छात्र अध्यापकों के साथ क्षेत्र में प्रचलित विभिन्न शिल्प-परंपराओं, उनके इतिहास, वितरण इत्यादि पर विचार-विमर्श कर सकते हैं। वे इंटरनेट, साधन-संपन्न व्यक्तियों तथा पुस्तकालय एवं विभिन्न स्रोतों के माध्यम से सभी उपलब्ध सूचनाएँ एकत्रित कर सकते हैं। शिल्प के विभिन्न पहलुओं पर व्यापक डेटा प्राप्त करने के लिए, छात्र साक्षात्कार सूची तैयार कर सकते हैं और यह निर्णय ले सकते हैं कि किन-किन शिल्पकारों का साक्षात्कार किया जाना है और किन स्थानों का दौरा किया जाना है इत्यादि।

शिक्षक छात्रों को सलाह अवश्य दें कि शिल्पकारों और समुदाय के अन्य लोगों के साथ कैसे बातचीत की जानी चाहिए। छात्र शिल्पकारों से कुछ

© NCERT not to be republished

वस्तुएँ भी खरीद सकते हैं, उनकी अनुमति लेकर फोटो खींच सकते हैं और चित्र इत्यादि बना सकते हैं। बाद में वे अपने प्रस्तुतीकरण अथवा परियोजना रिपोर्ट में इन सबका प्रयोग कर सकते हैं।

प्रलेखन के पश्चात, छात्र विद्यालय-सभा में, कक्षा, अथवा अभिभावक - शिक्षक बैठक में इसका प्रस्तुतीकरण कर सकते हैं।

क्षेत्र-अध्ययन को तार्किक दृष्टि से तीन चरणों में विभाजित किया जा सकता है। तीनों ही अंतर्निर्भर और समान रूप से महत्वपूर्ण हैं।

- पृष्ठभूमि अनुसंधान और उपक्रम
- क्षेत्र कार्य
- संगठन और डेटा प्रस्तुतीकरण

विद्यालय में क्षेत्र– अध्ययन आरंभ करने से पहले भिन्न-भिन्न क्रियाकलापों को आरंभ किया जाए।

6.1 साधनसंपन्न व्यक्ति खोजना

प्रत्येक समूह को आवंटित किए गए दीर्घ कार्य हेतु विद्यालय के बाहर कम से कम एक साधनसंपन्न व्यक्ति के मार्गनिर्देशन और सहयोग की निश्चित तौर पर आवश्यकता होगी।

ऐसे साधनसंपन्न व्यक्ति को शिल्प, कस्बे, एवं शहर के संबंध में पूर्णज्ञान होना चाहिए। साथ ही वह शिक्षक और छात्रों को संबंधित शिल्पकारों, उनके कार्यों/रहने के स्थानों हेतु मार्ग निर्देशन करने, और शहर में विशिष्ट शिल्प से जुड़े अन्य संसाधन केंद्रों (संग्रहालयों, शिल्प विद्यालयों, सहकारी समितियों इत्यादि) के बारे में बताने में सक्षम होना चाहिए।

एक साधनसंपन्न व्यक्ति के रूप में शिल्पकार

साधनसंपन्न व्यक्ति की संसाधन वस्तुओं जैसे कि पुस्तकों, छायाचित्र, फिल्मों, स्लाइडों इत्यादि तक पहुँच होनी चाहिए। ये सभी संसाधन उसके प्रस्तुतीकरण की गुणवत्ता को बढ़ाएँगे। छात्रों को विशेषज्ञ से आवश्यक जानकारी प्राप्त होगी और इससे भी बढ़कर इस बातचीत से वे कुछ करने के लिए प्रेरित होंगे।

संबंधित शिक्षकों को पहले से ही साधनसंपन्न व्यक्ति को ढूँढ़ लेना चाहिए। शिक्षकों को इस संपूर्ण योजना की संकल्पना साधनसंपन्न व्यक्ति को बताने के लिए उनके साथ एक बैठक करनी चाहिए। ताकि जैसे ही स्कूल खुलें उन्हें छात्रों से मिलकर इस परियोजना पर कार्य प्रारंभ कर सकें। शिक्षक इस संबंध में बेहतर निर्णय ले सकता है कि साधनसंपन्न व्यक्ति 16-17 वर्षीय छात्रों के साथ उनके स्तर पर अनौपचारिक रूप से बातचीत करने, उनकी जिज्ञासाओं का उत्तर देने और साथ ही उनकी रुचि को बनाए रखने में सक्षम होगा या नहीं।

© NCERT not to be republished

साधनसंपन्न व्यक्ति परियोजना अवधि के दौरान किसी भी प्रकार के रोचक क्रियाकलाप, उदाहरण के लिए क्षेत्र-भ्रमण, वाद-विवाद, आवासीय शिविर इत्यादि हेतु उपलब्ध होना चाहिए।

छात्र भावी संदर्भ के लिए साधनसंपन्न व्यक्ति के साक्षात्कार अथवा वार्ता को भी रिकॉर्ड कर सकते हैं।

6.2 पुस्तकालय कार्य

यद्यपि आज कई शहरों और विद्यालयों में पूर्ण सुविधा युक्त पुस्तकालय हैं, लेकिन सभी छात्र अधिक प्रभावी रूप से और पूरी क्षमता से उनका प्रयोग करना नहीं जानते हैं। यहाँ पर इस संबंध में कुछ निर्देश दिए गए हैं–

- पुस्तकालय जाने से पहले विषय (रुचि का सामान्य क्षेत्र अथवा विशिष्ट विषय) का अवश्य निर्णय कर लें।
- जिन विषयों की सूचना आवश्यक है, उन्हें विभिन्न उप-विषयों में विभाजित कर लें। उदाहरण के लिए, शिल्प विशेष का इतिहास, शिल्प विशेष प्रचलन का क्षेत्र, डिज़ाइन का प्रभाव एवं समावेश, संरक्षण इत्यादि।
- पुस्तकालयों को सामान्यतः विषय, शीर्षक अथवा लेखक के अनुसार या तो कार्ड-विषयसूची या कंप्यूटर-विषयसूची प्रयोग प्रणाली में व्यवस्थित किया जाता है। पुस्तकालय अध्यक्ष उस शेल्फ के बारे में सुझाव दे सकते हैं जिसमें उसकी रुचि के अनुसार पुस्तकें मिल सकती हैं अथवा उस परियोजना संबंधी सामग्री के लिए एक विशेष शेल्फ का निर्माण भी कर सकते हैं।
- दो या तीन पुस्तकों का चयन करें जो अच्छी हों और जिसमें आवश्यक जानकारी हो।
- पुस्तकों का चयन करने के बाद, उन्हें अच्छे से पढ़ें और देखें।
- अधिकतर संदर्भ पुस्तकों के अंत में, एक विषयसूची होती है जिसमें विषयों और शीर्षकों को दर्शाया जाता है और उनके सामने पृष्ठ संख्या दी जाती है। विषयसूची संदर्भों के माध्यम से शीघ्रता से पृष्ठों को पलटकर देखें। जो जानकारी आप ढूँढ़ रहे हैं उसके मिलने पर उपशीर्षकों के अंतर्गत सूचनाओं को वर्गीकृत करें, बिंदु रूप में नोट्स बनाना आरंभ करें और अन्य पुस्तकों से अतिरिक्त बिंदु जोड़ने के लिए उपयुक्त स्थान ही छोड़ें।
- याद रखें, एक विषय की अधिकांश पुस्तकों में एकसमान सामग्री ही दी जाती है इसलिए विभिन्न विचार बिंदुओं का समावेश करते हुए वही सामग्री नोट करें जो नई हो।

© NCERT not to be republished

- यह सुनिश्चित करें कि आप कुछ बेहतरीन उद्धरणों को एकत्र करते हुए अपनी भाषा में ही बिंदुओं को लिखें।

  निम्नलिखित उद्धरण एक पारंपरिक शिल्पकार के जीवन और कार्य पर बदलते परिवेश के प्रभाव को वर्णित करता है।

परंपरा की डोर

उनसे अपने चोलीनुमा ब्लाउज़ में फुँदनेवाली डोरी लगाने के लिए कहिए, वे ज़रूर लगाएंगे। शादी के बाद अगर आप मोटी हो जाती हैं, तो खुशी-खुशी आपके कुर्ते के उस मार्जिन को खोलकर ढीला कर देंगे जिसे वे अनुमान स्वरूप पहले ही छोड़ देते हैं। व्यावहारिक रूप से हर शहर में दर्जी को ग्राहकों के सनकीपन को झेलना पड़ता है जो अपनी कल्पना के अनुसार ही अपने कपड़े सिलवाना चाहती हैं। व्यक्तिगत सेवाओं के बावजूद उनकी विशेषज्ञता की माँग घट रही है और ऐसा बाज़ार में रेडीमेड पोशाकों के आने के कारण हुआ है।

रेडीमेड पोशाकों की क्रांति की मार झेल रहे दर्ज़ी अपने छोटे व्यवसाय के साथ भीड़-भाड़ वाले बाज़ारों के हर कोने में सहजता से रच-बस जाते हैं। भीड़-भाड़ वाले सरोजिनी नगर (दिल्ली) बाज़ार में एक रिटेल दुकान के बाहर छोटी-सी जगह के लिए एक दर्ज़ी को 200 रुपए प्रतिदिन का किराया देना होता है। ग्राहकों की कमी से परेशान वह कहता है ''मैं तो चाहता हूँ कि सभी रेमण्ड कपड़ों की दुकानें बंद हो जाएँ। उनकी वजह से मेरा काम बंद पड़ा है।'' पुरुषों की पेंट सिलने का उसका व्यवसाय जो कभी बहुत अच्छा था, अब समाप्त हो चुका है। छोटे-मोटे कामों जैसे साड़ी पर फॉल लगाना, कुर्ता ढीला करना आदि की निरंतर माँग से ही उसका अस्तित्व बना हुआ है। ''पहले 2-3 कारीगर मेरे साथ थे, अब मैं अकेला हूँ''। मंदी के बावजूद अपनी दक्षता में उसका आत्मविश्वास इस रूप में झलकता है कि वह फुटपाथ पर सिले गए एक ब्लाउज़ के लिए 150 रुपए लेता है।

शंकर बाज़ार के कई गलियारों में से एक में स्थित एक छोटी टेलरिंग शॉप के मालिक ने इच्छा जताई है कि काश! यहाँ की लड़कियाँ रेडीमेड गारमेंट की ओर इतना आकर्षित नहीं होतीं। यद्यपि कुछ नियमित ग्राहक एकदम सही फिटिंग के लिए उसके पास आते रहते हैं, लेकिन मज़ाकिया अंदाज़ में वह यह स्वीकार करता है कि आजकल उसकी सबसे वफादार ग्राहक उसकी पत्नी है। शहर में रहने वाली कई लड़कियों के लिए स्थानीय दर्ज़ी का तब अत्यधिक महत्त्व होता है जब किसी शादी में जाने के लिए उन्हें एक फैंसी कुर्ता-चूड़ीदार चाहिए हो। अब उनके वार्डरोब पाश्चात्य फैशन के प्रचलित कपड़ों को अधिक महत्त्व दिया जाता है, जिन्हें वे बाज़ार जाकर खरीद सकते हैं।

किसी समय में शहर के तड़क-भड़क लोगों के पसंदीदा बाज़ार, चाँदनी-चौक में भी ग्राहकों की संख्या में कमी आई है, जहाँ पर कभी अलंकृत जीवन-शैली के लिए उपयुक्त डिज़ाइन और सिलाई किए गए कपड़ों की माँग होती थी। सीताराम बाज़ार में एक पुरानी टेलरिंग-शॉप के मालिक उस समय को याद कर

भावुक हो जाते हैं, जब इस छोटी-सी दुकान में राजशाही और प्रधानमंत्रियों के लिए कपड़े सिले जाते थे। उनके पिता ने लगभग 1950 में यह दुकान खोली थी, और उन्होंने अपने युवाकाल में लाल बहादुर शास्त्री के लिए कुर्ते, बंद गला जैकेट और पेंट-पजामे सिले थे। अब उनके हाई-प्रोफाइल ग्राहक नहीं हैं और उनसे पेंट सिलवाने वालों में मोटी तोंद वाले स्थानीय लाला अधिक हैं।

शहर में पुरुषों के टेलर अपने व्यवसाय में घटती संभावनाओं को देखते हुए रेडीमेड शर्ट, ट्राउज़र और सूट लेंथ के रिटेल व्यवसाय में लग गए हैं ताकि वे अपने ग्राहकों को बनाए रख सकें और साथ ही युवाओं को भी आकर्षित कर सकें। कनॉट प्लेस में एक दुकान के मालिक का मानना है कि हाथ से बनी हुई कमीज़ की बराबरी बड़े-बड़े ब्रांड भी नहीं कर सकते। हालाँकि वे रेडीमेड शर्ट की रिटेलिंग करते हैं लेकिन जो पुरानी दिल्ली वाले हमारे जानकार हैं अभी भी अपनी कमीज़ें सिलवाना ही पसंद करते हैं।

कनॉट प्लेस में पुरुषों की टेलरिंग की सबसे पुरानी दुकानों में से एक में कार्यरत मास्टरजी महसूस करते हैं कि आजकल ऑर्डरों में जो गिरावट आई है वह मात्र मौसमी तथ्य है। शादियों का सीज़न (अक्तूबर-फरवरी) निःसंदेह व्यस्त होता है। दर्ज़ी द्वारा सिले हुए सूट अधिकांशतः प्रौढ़ ग्राहकों में ही लोकप्रिय हैं। युवा वर्ग तो नए ब्रांडेड कपड़े ही पसंद करते हैं। यही नहीं, अंतर्राष्ट्रीय स्तर तक पहुँच चुके युवा ग्राहक चुस्त-दुरुस्त स्टाइलिंग पर अधिक ध्यान दे रहे हैं। कई बार तो अपना पसंदीदा कट दिखाने के लिए वे फैंसी केटलॉग भी साथ ले आते हैं।

पुरुषों की पारंपरिक टेलरिंग की दुकानें इस ट्रेंड को भुना रही हैं और इस व्यवसाय के एक पुराने खिलाड़ी का कहना सही है, ''युवा महिला एग्ज़ीक्यूटिव साक्षात्कार अथवा किसी प्रस्तुतीकरण से पहले अकसर हमारे पास आती हैं। इस दुकान में विदेशी ग्राहकों के लिए जोधपुरी सूट भी सिले जाते हैं। इसके साथ ही रेडीमेड शर्ट और सूट लेंथ के लिए भी यह दुकान बहुत प्रसिद्ध है।

दरियागंज में टेलर और ड्रेपर्स की एक दुकान ने भी घटती हुई माँग को देखते हुए रेडीमेड गारमेंट का व्यवसाय भी आरंभ किया है। लेकिन अपने क्षेत्र के अन्य शिल्पकारों की तरह इस दुकान का मालिक अपने टेलरिंग व्यवसाय को बंद नहीं करना चाहता। अपनी अचकनों और शेरवानियों की सफ़ाई से सिलाई को गर्व से देखते हुए वे बताते हैं कि ''मेरे ग्राहक में एन.आर.आई. भी शामिल हैं जो मेरे पास अपना नाप छोड़ जाते हैं और आशा करते हैं मैं इन्हें उन तक पहुँचा दूँ। पहले एक कारीगर को एक कोट सिलने में कम-से-कम तीन दिन लगते थे, कोट के अंदर की लाइनिंग को पूरी तरह हाथ से सिला जाता था। अब तकनीकी उत्कृष्टता के कारण 15 मिनट में कोट सिलना संभव है।''

15 मिनट में कोट की सिलाई कर बेहतर व्यापार किया जा सकता है, तथापि निपुण दर्ज़ी पीढ़ी-दर-पीढ़ी सीखे गए इस सुनियोजन कौशल को छोड़ने के लिए तैयार नहीं हैं। अपने व्यवसाय में वाणिज्य और प्रतिभा के बीच के संघर्ष को वे 'एक समय में एक सिलाई' के सिद्धांत के द्वारा जारी रखना चाहते हैं।

–राधिका ओबराय, संडे टाइम्स ऑफ़ इंडिया, 18 मई 2008

© NCERT not to be republished

यह लेख टेलरिंग व्यवसाय में बदलती प्रवृत्तियों का अच्छा उदाहरण है। यह उदाहरण हमारे पड़ोस के किसी भी पारंपरिक स्व-नियोजित टेलर का हो सकता है।

क्रियाकलाप

उपर्युक्त वर्णित स्थितियों के आधार पर एक 'केस-स्टडी' तैयार कर लगभग 1000 शब्दों में किसी समाचार पत्र के लिए लेख लिखें। यह भी बताएँ कि निरंतर बदलते हुए फैशन शिल्पकार-समुदाय को कैसे प्रभावित कर रहे हैं? इसके लिए आप कई शिल्पकारों का साक्षात्कार ले सकते हैं और उनसे बातचीत कर सकते हैं।

6.3 मानचित्रों का उपयोग

मानचित्र पहले से एकत्रित व आकर्षक ढंग से लिखी गई सामग्री को संक्षेप में दिखाने का चित्रात्मक (visual) तरीका है। यद्यपि छात्र मानचित्र बनाने और इसे भरने के क्रियाकलाप से पहले से परिचित हैं पर उन्हें इसे प्रस्तुत करने का भिन्न लेकिन प्रभावी तरीका भी सिखाया जाना चाहिए। इस परियोजना हेतु छात्र निम्न बिंदुओं को दर्शाने के लिए मानचित्र बना सकते हैं–

- शिल्प यात्रा
- कच्चा माल किस क्षेत्र से आता है?
- संपर्क–इसे कौन बनाता है? और इसका उपयोग कौन करता है?
- शिल्प समुदाय शहर/कस्बे/गाँव में कहाँ रहता है, कार्य करता है और अपना सामान बेचता है?

कक्षा के विभिन्न समूहों द्वारा अलग-अलग राज्य, भारत और विश्व पर केंद्रित कई प्रकार के नक्शे बनाए जा सकते हैं। इसमें निम्न कुछ प्रविधियाँ सहायक हो सकती हैं–

- चिह्नित करने के लिए कार्डबोर्ड कट-आउट का उपयोग किया जा सकता है।
- विभिन्न प्रकार की रंगीन ड्रांइग पिनों से क्षेत्रों को जोड़ा जा सकता है।
- यात्रा-मार्गों को दर्शाने के लिए रंगीन धागों का उपयोग किया जा सकता है।
- शिल्प से संबंधित चिह्न बनाएँ और साथ में उनका स्पष्टीकरण भी दें।

और भी अधिक व्यावसायिक नक्शे तैयार करने के लिए आप इसमें कार्टटच अथवा सुसज्जित पैनलों का उपयोग कर सकते हैं। नक्शे का शीर्षक अथवा इसके चिह्नों का स्पष्टीकरण दिया गया हो। कार्टटच को अकसर फूल-पत्तियों अथवा पक्षियों के चित्रों से अच्छी तरह सजाया जाता है। आप टैक्सटाइल/एम्ब्राइडरी नक्शों के लिए 'काँथा' मोटिफ की एम्ब्राइडरी का उपयोग कर सकते हैं। इसी प्रकार भारत में पॉटरी परंपरा या विभिन्न भागों में प्रचलित तकनीकों के लिए घड़े के भीतर डिज़ाइन करने के बारे में सोच सकते हैं। इससे विचारों के लिए ऐतिहासिक पुस्तकों में पुनः प्रस्तुत किए गए प्राचीन मानचित्र को देखें।

© NCERT not to be republished

अपने मानचित्र को प्राचीन रूप देने के लिए सर्वप्रथम कागज़ के ऊपर गर्म टी-बैग को रगड़ें। इससे आपके कागज़ का रंग पुराने कागज़ की तरह असमान हलका भूरा जैसा हो जाएगा। विवरण के लिए पानी के रंगों से पेंट करें और मानचित्र तैयार होने के बाद इस पर मुड़ी-तुड़ी क्रीज़ लाने के लिए इसे कई बार मोड़ें। यह तरीका भारत में पारंपरिक आभूषण, प्राचीन व्यापारिक मार्गों और निर्यातों के मानचित्र में प्रभावी होगा।

नीचे दिए गए चित्रों का रोचक शीर्षक लिखें

6.4 छाया चित्रों का अध्ययन

अकसर स्कूलों में मैगज़ीन और पर्यटन विवरणिका में से पुन: प्रस्तुत फोटो को एकत्रित करने का रोचक क्रियाकलाप किया जाता है ताकि उनका अध्यापन में सहायक-सामग्री के रूप में उपयोग किया जा सके। लेकिन इनमें से अधिकांश को केवल सरसरी तौर ही पर देखा जाता है। इनका उपयोग 'कोलाज' अथवा 'चार्ट' के केंद्र बिंदु को सजाने के लिए, अध्ययन-उपकरण तथा किसी मुद्दे पर जागरूकता को बढ़ाने के तरीके के रूप में किया जा सकता है।

किसी फोटोग्राफ को समझने का एक तरीका है—फोटो में दी गई प्रत्येक वस्तु को ध्यानपूर्वक देखें और यदि संभव हो तो उन सबकी पहचान करें। फिर फोटो के प्रत्येक हिस्से को देखें। तत्पश्चात मौसम, दिन का समय, सूर्य की स्थिति, मौसम की दशाओं का अनुमान लगाएँ। सोचें कि फोटो की सीमा के परे क्या हो सकता है? अब फोटो में एक निर्धारित बिंदु को देखें, जहाँ पर किसी अन्य व्यक्ति को खड़ा किया जा सकता है। उस बिंदु को देखें, अपनी आँखें बंद करें और सोचें कि फोटो के अंदर आप खड़े हैं—फोटो के अंदर। आँखों को बंद करके अपने आसपास के दृश्य—इसके रंग, बुनावट, गंध, भावनाओं की कल्पना करें। यह मानें कि आप वास्तव में वहाँ पर हैं। आप अपने सामने खड़े कैमरामैन को भी देख सकते हैं। इन ध्वनियों को सुनें और देखें कि फ्रेम के पीछे क्या है। कुछ देर रुकें, रिलेक्स करें और इन सब चीज़ को आत्मसात् करें।

इस कल्पनात्मक क्रियाकलाप के बाद आप अपने अनुभव पर आधारित एक व्याख्यात्मक लेख लिखने का प्रयास कर सकते हैं।

क्रियाकलाप

शिल्पकारों के बारे में और अधिक जानकारी प्राप्त करने के लिए विभिन्न पत्रिकाओं से फोटोग्राफ एकत्रित कर सकते हैं। फोटोग्राफ के लिए यात्रा संबंधी

© NCERT not to be republished

पत्रिकाएँ अच्छा स्रोत हैं। फोटोग्राफों में दिखाए गए शिल्पकारों को देखें और निम्नलिखित प्रश्नों का उत्तर जानकर/इनकी कल्पना कर उनकी सोच तथा भावनाओं को समझने का प्रयास करें–

- फोटो में दी गई घटनाओं के बारे में आप क्या सोचते हैं?
- तत्पश्चात् क्या होगा?
- फोटोग्राफर ने इस विशेष फोटोग्राफ को किस कारण से खींचा होगा?
- इस फोटो में जो व्यक्ति है, उसका बचपन कैसा रहा होगा?
- उसने कार्य करना कब आरंभ किया होगा और क्यों?
- जो आपका शौक है वह दूसरे का कार्य है चर्चा करें।
- उस व्यक्ति के संबंध में कल्पनात्मक तथ्य–पता, व्यवसाय, परिवार के सदस्य, उनकी पृष्ठभूमि इत्यादि लिखें।
- इस व्यक्ति की ओर से किसी मित्र को अथवा किसी मित्र की ओर से इस व्यक्ति को एक पत्र लिखें। सोचें कि इसमें आप क्या-क्या लिख सकते हैं?
- उस व्यक्ति की डायरी के एक पृष्ठ को कल्पना करके लिखें।
- वह व्यक्ति कहाँ रहता है और उसकी दिनचर्या क्या है? इस संबंध में लिखें।
- कल्पना करें कि आप ही वृद्धावस्था में वह व्यक्ति हैं। उस वृद्ध व्यक्ति में क्या पसंद करेंगे और क्या नहीं।
- अपने समूह के प्रत्येक छात्र से फोटोग्राफ को एक शीर्षक देने के लिए कहें। इनमें से कौन सा शीर्षक फोटोग्राफ को बेहतर ढंग से व्यक्त करता है। कौन-सा शीर्षक आपको इस विषय के बारे में सोचने के लिए मजबूर करता है?

इन फोटो के आकर्षक शीर्षकों और संबंधित प्रश्नों सहित समुचित ढंग से एक प्रदर्शनी लगाएँ ताकि आप इस मुद्दे से अपने स्कूल के अन्य छात्रों को अवगत करा सकें।

6.5 शिल्पकार से साक्षात्कार हेतु तैयारी करना

अब समय आ गया है कि आप अपने पड़ोस में रहने वाले शिल्पकार के जीवन और व्यवसाय का ब्योरा प्राप्त करने के लिए उसका साक्षात्कार करने की योजना बनाएँ। इस संबंध में निम्नलिखित बिंदुओं पर विचार करें–

- वे कहाँ रहते हैं?
- क्या वे अपने पारंपरिक व्यवसाय को आगे बढ़ा रहे हैं?
- वे दिन में कितने घंटे कार्य करते हैं?
- उनके साथ उनके परिवार के कितने सदस्य कार्य करते हैं?
- क्या वे वर्ष भर कार्य करते हैं?
- यदि नहीं तो वे कौन से अन्य कार्यों में व्यस्त रहते हैं?
- वे कितना कमा लेते हैं?
- जब बाज़ार में मंदी आती है तो वे क्या करते हैं?

© NCERT not to be republished